आत्मिक अधिकार

फ्रैंकलीन द्वारा तैयार नोट्स

I. परिचय

फिलिप्पियों 2:5–11
(5) जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।

(6) जिस ने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा।

अपने ऊपर अधिकारियों को हमें अपने अधिकार सौंपना या देना सीखना चाहिए। क्या यह उसका राज्य है ... या हमारा ? क्या वह हमारा प्रभु है ? स्वा़मी कौन है ?

जब तुम मेरा कहना नहीं मानते, तो क्यों मुझे हे प्रभु, हे प्रभु, कहते हो?
लूका 6:46

व्यवस्थाविवरण 12:8–9 जैसे हम आजकल यहां जो काम जिसको भाता है वही करते हैं वैसा तुम न करना; जो विश्रामस्थान तुम्हारा परमेश्वर यहोवा तुम्हारे भाग में देता है वहां तुम अब तक तो नहीं पहुंचे।

न्यायियों 17:6 उन दिनों में इस्राएलियों का कोई राजा न था; जिसको जो ठीक सूझ पड़ता था वही वह करता था।।

नीतिवचन 12:15 मूढ़ को अपनी ही चाल सीधी जान पड़ती है, परन्तु जो सम्मति मानता, वह बुद्धिमान है।

(7) वरन अपने आप को ऐसा शून्य कर दिया, और दास का स्वरूप धारण किया, और मनुष्य की समानता में हो गया।

यूहन्ना 5:19–20 इस पर यीशु ने उन से कहा, मैं तुम से सच सच कहता हूं, पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है, क्योंकि जिन जिन कामों को वह करता है उन्हें पुत्र भी उसी रीति से करता है। क्योंकि पिता पुत्र से प्रीति रखता है और जो जो काम वह आप करता है, वह सब उसे दिखाता है;

यूहन्ना 5:30 मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता; जैसा सुनता हूं, वैसा न्याय करता हूं, और मेरा न्याय सच्चा है; क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं, परन्तु अपने भेजनेवाले की इच्छा चाहता हूं।

यूहन्ना 8:29 और मेरा भेजनेवाला मेरे साथ है; उस ने मुझे अकेला नहीं छोड़ा; क्योंकि मैं सर्वदा वही काम करता हूं, जिस से वह प्रसन्न होता है।

(8) और मनुष्य के रूप में प्रगट होकर अपने आप को दीन किया, और यहां तक आज्ञाकारी रहा, कि मृत्यु, हां, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।

मत्ती 26:39 हे मेरे पिता, यदि हो सके, तो यह कटोरा मुझ से टल जाए; तौभी जैसा मैं चाहता हूं वैसा नहीं, परन्तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।

(9) इस कारण परमेश्वर ने उसको अति महान भी किया, और उसको वह नाम दिया जो सब नामों में श्रेष्ठ है।

जब हम अपने ऊपर अधिकारियों के प्रति समर्पित होना, अधीन होना और आज्ञा मानना सीखेंगे तब हम भरोसे को प्राप्त करेंगे और अधिकार हमें दिया जाएगा।

(10) कि जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर और जो पृथ्वी के नीचे है; वे सब यीशु के नाम पर घुटना टेकें।(11) और परमेश्वर पिता की महिमा के लिये हर एक जीभ अंगीकार कर ले कि यीशु मसीह ही प्रभु है।।

मत्ती 28:18 यीशु ने उन के पास आकर कहा, कि स्वर्ग और पृथ्वी का सारा अधिकार मुझे दिया गया है।

सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर ही "अधिकारी" है।

अधिकार

1. कानून लागू करने, आज्ञा पालन के लिए बाध्य करने तथा आज्ञा देने की शक्ति।
2. किसी अन्य को दी गई शक्ति।

लूका 7:1–10 सूबेदार
मैं भी पराधीन मनुष्य हूं; और सिपाही मेरे हाथ में हैं, और जब एक को कहता हूं, जा, तो वह जाता है, और दूसरे से कहता हूं कि आ, तो आता है; और अपने किसी दास को कि यह कर, तो वह उसे करता है।

जब तक आप पराधीन नहीं हैं तब तक आपको अधिकार प्राप्त नहीं होता।

सच्चा अधिकार, उच्च अधिकारी द्वारा दिया जाता है। यदि अधिकार दिया नहीं अपितु छीना जाए ... तो वह विद्रोह है।

रोमियों 13:2 इस से जो कोई अधिकार का विरोध करता है, वह परमेश्वर की विधि का साम्हना करता है, और साम्हना करनेवाले दण्ड पाएंगे।

जो परमेश्वर ने बनाया या उसके द्वारा स्थापित है, उसके विरुद्ध विद्रोह करने का अर्थ परमेश्वर के विरुद्ध विद्रोह है और इसका दण्ड आएगा।

परमेश्वर के अधिकार के विरुद्ध सबसे पहला विद्रोह, उसके द्वारा सृजे स्वर्गदूत लूसीफर के द्वारा था (यशायाह 14:12–16; यहेजकेल 28:12–19)।

लूसीफर ने उस अधिकार को लेने का प्रयत्न किया जो उसे नहीं दिया गया था।

लूसीफर को दण्ड : नाम बदल गया / अपना पदाधिकार खो बैठा / स्वर्ग से पृथ्वी पर गिरा दिया गया ; और फिर अन्त मे शिओल और अग्नी की झील में झोंक दिया जाएगा।

अधिकारीयों के विरुद्ध किसी भी प्रकार का विद्रोह शैतानी सिद्धान्त है तथा इसका परिणाम दण्ड या ताड़ना होती है।

उदाहरण : आदम और हव्वा रोमियों 6:16

II. राजा शाऊल की अनाज्ञाकारिता का उदाहरण :

1 शमूएल 15:10–11 तब यहोवा का यह वचन शमूएल के पास पहुंचा, कि मैं शाऊल को राजा बना के पछताता हूं; क्योंकि उस ने मेरे पीछे चलना छोड़ दिया, और मेरी आज्ञाओं का पालन नहीं किया। तब शमूएल का क्रोध भड़का; और वह रात भर यहोवा की दोहाई देता रहा।

पद : 22–23 शमूएल ने कहा, क्या यहोवा होमबलियों, और मेलबलियों से उतना प्रसन्न होता है, जितना कि अपनी बात के माने जाने से प्रसन्न होता है? सुन मानना तो बलि चढ़ाने और कान लगाना मेढ़ों की चर्बी से उत्तम है। देख बलवा करना और भावी कहनेवालों से पूछना एक ही समान पाप है, और हठ करना मूरतों और गृहदेवताओं की पूजा के तुल्य है। तू ने जो यहोवा की बात को तुच्छ जाना, इसलिये उस ने तुझे राजा होने के लिये तुच्छ जाना है।

शाऊल की अनाज्ञाकारिता का कारण यह था कि उसको इस बात की ज़्यादा चिन्ता थी कि लोग उसके बारे में क्या सोचेंगे बजाय इसके कि परमेश्वर उसके बारे में क्या सोचते हैं।

पद 24 "...मैं ने तो अपनी प्रजा के लोगों का भय मानकर ..."

जिसका आप भय मानते हो उसका आप कहना मानोगे।
यदि प्रेम पर्याप्त प्रेरणादायक नहीं है तो भय होना चाहिए।

(माता–पिता को प्रेम और ताड़ना (भय बैठा कर) दोनो का इस्तेमाल अपने बच्चों में करना चाहिए)।

परमेश्वर के वचन के प्रति शाऊल की अनाज्ञाकारिता का परिणाम उसे चूकाना पड़ा :

क) अपना पद खो कर !

ख) अनेक समस्याएं ! क्योंकि "बलवा करना और भावी कहनेवालों से पूछना एक ही समान पाप है" । शाऊल ने शैतान के राज्य में कदम रखा। उसने अपने पापों का अंगीकार नहीं किया और न ही पश्चाताप किया, इस कारण :

1 शमूएल 16:14 और यहोवा का आत्मा शाऊल पर से उठ गया, और यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा उसे घबराने लगा।

अपने ऊपर के अधिकारी की आज्ञा न मानने का यह गम्भीर परिणाम था।

हम इस वाक्य को "यहोवा की ओर से एक दुष्ट आत्मा " को कैसे समझ सकते हैं ?

आइये हम इसी प्रकार की घटना नए नियम में भी देखें :

लूका 22:31–34 शमौन, हे शमौन, देख, शैतान ने तुम लोगों को मांग लिया है कि गेंहूं की नाई फटके। परन्तु मैं ने तेरे लिये विनती की, कि तेरा विश्वास जाता न रहेः और जब तू फिरे, तो अपने भाइयों को स्थिर करना। उस ने उस से कहा; हे प्रभु, मैं तेरे साथ बन्दीगृह जाने, वरन मरने को भी तैयार हूं। उस ने कहा; हे पतरस मैं तुझ से कहता हूं, कि आज मुर्ग बांग देगा जब तक तू तीन बार मेरा इन्कार न कर लेगा कि मैं उसे नहीं जानता।।

बिना यीशु की अनुमति के शैतान पतरस को छू भी नहीं सकता था क्योंकि पतरस यीशु का था। परन्तु शैतान के पास अपनी मांग करने का वैधिक अधिकार था क्योंकि पतरस ने पाप किया था – उसने शैतान के अन्धकार के राज्य में कदम रख दिया।

या, पतरस के जीवन में पाप का एक क्षेत्र था जिसने शैतान को उस क्षेत्र में जाने का कानून अधिकार दिया।

कैसे? कुछ पद पहले जाएं और संदर्भ को पढ़ें ; पद 24 हमें नहीं बताता कि किसने विवाद जीता। परन्तु, पतरस के स्वभाव को जानते हुए, मुझे ऐसा लगता है कि उसने अपने संगी शिष्यों को अपने पानी पर चलने की बात याद दिलाते हुए वह विवाद जीत लिया होगा। घमण्ड ! यह शैतान का पाप था जिसके परिणामस्वरुप उसने बलवा किया।

ध्यान दें कि यीशु ने "नहीं " नहीं कहा। पाप के कारण शैतान को "कानून्न" अनुमति मिली कि वह पतरस पर हमला करे, जिस प्रकार शाऊल पर "दुष्ट आत्मा", "परमेश्वर की ओर" से कही गई। पाप के कारण इन दोनो की अनुमति परमेश्वर के द्वारा दी गई थी।

याकूब 4:7 इसलिये परमेश्वर के आधीन हो जाओ; और शैतान का सामना करो, तो वह तुम्हारे पास से भाग निकलेगा।

इस से हम मत्ती 18:21–35 ("दण्ड देने वाले" पद 34) को भी समझते हैं

यह प्रशन है कि : आप आज्ञा कैसे मानते हैं ? आप किसके आधीन हैं?

आप के साथ जो कुछ होता है वह बहुत कुछ इस बात के द्वारा निर्धारित होता है कि :
आप किसका सामना कर रहे हैं? और आप किसकी आज्ञा मान रहे हैं ?

1 पतरस 5:6–8 इसलिये परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, ... क्योंकि तुम्हारा विरोधी शैतान गर्जनेवाले सिंह की नाई इस खोज में रहता है, कि किस को फाड़ खाए ।

परन्तु यदि हम अपने आप को नम्र और दीन करें, और अधिकारियों की आज्ञा मानें, तो 1 यूहन्ना 5:18 "हम जानते हैं कि जो कोई परमेश्वर से उत्पन्न हुआ है वह पाप नहीं करता ; परन्तु वह जो परमेश्वर से उत्पन्न हुआ, उसकी रक्षा करता है और वह दुष्ट उसे छूने नहीं पाता।"

III. परमेश्वर के द्वारा ठहराए अधिकार के चार ढांचे

1. परिवार : यीशु ▷ पिता ▷ मां ▷ बच्चे

1 कुरिन्थियों 11:2–4 सो मैं चाहता हूं, कि तुम यह जान लो, कि हर एक पुरूष का सिर मसीह हैः और स्त्री का सिर पुरूष हैः और मसीह का सिर परमेश्वर है।

कुलुस्सियों 3:20 हे बालको, सब बातों में अपने अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करो, क्योंकि प्रभु इस से प्रसन्न होता है।

इफिसियों 6:1–3 हे बालकों, प्रभु में अपने माता पिता के आज्ञाकारी बनो, क्योंकि यह उचित है। "अपनी माता और पिता का आदर कर (यह पहिली आज्ञा है, जिस के साथ प्रतिज्ञा भी है) कि तेरा भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे।"

नीतिवचन 6:20–21 हे मेरे पुत्र, मेरी आज्ञा को मान, और अपनी माता की शिक्षा का न तज। इन को अपने हृदय में सदा गांठ बान्धे रख; और अपने गले का हार बना ले।

नीतिवचन 30:17 जिस आंख से कोई अपने पिता पर अनादर की दृष्टि करे, और अपमान के साथ अपनी माता की आज्ञा न माने, उस आंख को तराई के कौवे खोद खोदकर निकालेंगे, और उकाब के बच्चे खा डालेंगे।।

नीतिवचन 15:5 मूढ़ अपने पिता की शिक्षा का तिरस्कार करता है, परन्तु जो डांट को मानता, वह चतुर हो जाता है।

जिस प्रकार कोई किशोर अपने माता–पिता के अधिकारों की ओर अपनी प्रतिक्रिया दिखाता है, उसी प्रकार शीघ्र वह अपने सारे अधिकारियों की ओर अपनी प्रतिक्रिया दिखाने वाला है।

2. सरकारी : राष्ट्रीय नेता ▷ स्थानीय नेता ▷ नागरिक

1 पतरस 2:13–14 प्रभु के लिये मनुष्यों के ठहराए हुए हर एक प्रबन्ध के आधीन में रहो, राजा के इसलिये कि वह सब पर प्रधान है। और हाकिमों के, क्योंकि वे कुकर्मियों को दण्ड देने और सुकर्मियों की प्रशंसा के लिये उसके भेजे हुए हैं।

रोमियों 13:1–7 हर एक व्यक्ति प्रधान अधिकारियों के अधीन रहे; क्योंकि कोई अधिकार ऐसा नहीं, जो परमेश्वर की ओर स न हो; और जो अधिकार हैं, वे परमेश्वर के ठहराए हुए हैं। (2) इस से जो कोई अधिकार का विरोध करता है, वह परमेश्वर की विधि का साम्हना करता है, और साम्हना करनेवाले दण्ड पाएंगे। (3) क्योंकि हाकिम अच्छे काम के नहीं, परन्तु बुरे काम के लिये डर का कारण हैं; सो यदि तू हाकिम से निडर रहना चाहता है, तो अच्छा काम कर और उस की ओर से तेरी सराहना होगी; (4) क्योंकि वह तेरी भलाई के लिये परमेश्वर का सेवक है। परन्तु यदि तू बुराई करे, तो डर; क्योकि वह तलवार व्यर्थ लिये हुए नहीं; और परमेश्वर का सेवक है; कि उसके क्रोध के अनुसार बुरे काम करनेवाले को दण्ड दे। (5) इसलिये अधीन रहना न केवल उस क्रोध से परन्तु डर से अवश्य है, वरन विवेक भी यही गवाही देता है। (6) इसलिये कर भी दो, क्योंकि परमश्वेर के सेवक हैं, और सदा इसी काम में लगे रहते हैं। (7) इसलिये हर एक का हक्क चुकाया करो, जिसे कर चाहिए, उसे कर दो; जिसे महसूल चाहिए, उसे महसूल दो; जिस से डरना चाहिए, उस से डरो; जिस का आदर करना चाहिए उसका आदर करो।।

3. कलीसिया : यीशु ▷ कलीसियाई अगुवे ▷ कलीसिया के सदस्य

1 थिस्सलुनीकियों 5: 12–13 और हे भाइयों, हम तुम से विनती करते हैं, कि जो तुम में परिश्रम करते हैं, और प्रभु में तुम्हारे अगुवे हैं, और तुम्हें शिक्षा देते हैं, उन्हें मानो।(13) और उन के काम के कारण प्रेम के साथ उन को बहुत ही आदर के योग्य समझो; आपस में मेल-मिलाप से रहो।

इब्रानियों 13:17 अपने अगुवों की मानो; और उनके अधीन रहो, क्योंकि वे उन की नाई तुम्हारे प्राणों के लिये जागते रहते, जिन्हें लेखा देना पड़ेगा, कि वे यह काम आनन्द से करें, न कि ठंडी सांस ले लेकर, क्योंकि इस दशा में तुम्हें कुछ लाभ नहीं।

1 तीमुथियुस 5:17 जो प्राचीन अच्छा प्रबन्ध करते हैं, विशेष करके वे जो वचन सुनाने और सिखाने में परिश्रम करते हैं, दो गुने आदर के योग्य समझे जाएं।

1 पतरस 5:1–3 तुम में जो प्राचीन हैं, मैं उन की नाईं प्राचीन और मसीह के दुखों का गवाह और प्रगट होनेवाली महिमा में सहभागी होकर उन्हें यह समझाता हूं। कि परमेश्वर के उस झुंड की, जो तुम्हारे बीच में हैं रखवाली करो; और यह दबाव से नहीं, परन्तु परमेश्वर की इच्छा के अनुसार आनन्द से, और नीच-कमाई के लिये नहीं, पर मन लगा कर। और जो लोग तुम्हें सौंपे गए हैं, उन पर अधिकार न जताओ, वरन झुंड के लिये आदर्श बनो।

4. व्यापार : यीशु ▷ मालिक ▷ कर्मचारी

कुलुस्सियों 3:22 – 25

(22) हे सेवको, जो शरीर के अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं, सब बातों में उन की आज्ञा का पालन करो, मनुष्यों को प्रसन्न करनेवालों की नाईं दिखाने के लिये नहीं, परन्तु मन (पूरे हृदय) की सीधाई और परमेश्वर के भय से।

(23) और जो कुछ तुम करते हो, तन मन से करो, यह समझकर कि मनुष्यों के लिये नहीं परन्तु प्रभु के लिये करते हो।

(24) क्योंकि तुम जानते हो कि तुम्हें इस के बदले प्रभु से (मनुष्यों से नहीं) मीरास (सच्ची) मिलेगी : तुम प्रभु मसीह की सेवा करते हो।

(25) क्योंकि जो बुरा करता है (अपनी मूढ़ता का फल पाएगा), वह अपनी बुराई का फल पाएगा; वहां (परमेश्वर के साथ) किसी का पक्षपात नहीं (इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि व्यक्ति की क्या प्रतिष्ठा है, वह दास है या स्वामी है)।

1 पतरस 2:18
हे सेवकों, हर प्रकार के भय के साथ अपने स्वामियों के आधीन रहो, न केवल भलों और नम्रों के, पर कुटिलों के भी।

1 तीमुथियुस 6:1–2 जितने दास जूए के नीचे हैं, वे अपने अपने स्वामी को बड़े आदर के योग्य जानें, ताकि परमेश्वर के नाम और उपदेश की निन्दा न हो। और जिन के स्वामी विश्वासी हैं, इन्हें वे भाई होने के कारण तुच्छ न जानें; वरन उन की और भी सेवा करें, क्योंकि इस से लाभ उठाने वाले विश्वासी और प्रेमी हैं: इन बातों का उपदेश किया कर और समझाता रह।।

IV. हमारे जीवन में परमेश्वर की इच्छा – उसकी अगुवाई – अकसर उन अधिकारियों के द्वारा प्रकट होती है जिन्हें उसने हमारे ऊपर ठहराया है।

वयस्कों के लिए :

परमेश्वर हमें इस बात का आश्वासन देता है कि वह हमारे ऊपर ठहराए गए लोगों के हृदयों को बदल सकता है :

नीतिवचन 21:1 राजा का मन नालियों के जल की नाई यहोवा के हाथ में रहता है, जिधर वह चाहता उधर उसको फेर देता है।

नौजवानों के लिए :

नीतिवचन 22:15 लड़के के मन में मूढ़ता की गांठ बन्धी रहती है , परन्तु अनुशासन की छड़ी के द्वारा वह खोलकर उस से दूर की जाती है।

नीतिवचन 6:20–22 हे मेरे पुत्र, मेरी आज्ञा को मान, और अपनी माता की शिक्षा का न तज। इन को अपने हृदय में सदा गांठ बान्धे रख ; और अपने गले का हार बना ले। वह तेरे चलने में तेरी अगुवाई, और सोते समय तेरी रक्षा, और जागते समय तुझ से बातें करेगी।

बिना किसी मार्गदर्शन के बहुत से नवयुवक बहक रहे हैं और लगातार गलत र्निणयों को ले रहे हैं। यह इसलिए है क्योंकि उन्होंने अपने माता–पिता के अधिकार में रहने को या तो नकार दिया या उसके विरुद्ध बलवा किया है।

अपने माता–पिता की अधीनता से बचने के लिए बहुत से नौजवान घर से भाग कर सेना में भरती हो जाते हैं। फिर इसके बाद वे कठिन रीति से अधिकार में रहना सीखते हैं।

अपने माता–पिता की अधीनता से बचने के लिए बहुत से जवान लड़कियां घर से भाग कर शादी कर लेती हैं, और फिर बाद में पता चलता है कि अब उनका पति उनसे उखड़ा–उखड़ा सा रहता है।

अधिकारियों से भागने के विषय में परमेश्वर क्या कहता है ?

उत्पत्ति 16:9 यहोवा के दूत ने उस से कहा, "अपनी स्वामिनी के पास लौट जा और अपने आप को उसके अधीन कर दे।"

(हाजिरा, इब्राहिम की पत्नी सारै से बच कर भाग रही थी।)

हमारे चरित्र को यीशु के समान बनते देखने के लिए परमेश्वर हमारे ऊपर ठहराए गए हर एक अधिकार का इस्तेमाल करेगा ताकि वह हमारे चरित्र के खुरदरे कोनों को 'तराश' सके (जिस प्रकार सुनार हीरे को काटता, तराशता और आकार देता है)।

परमेश्वर ने हमारे ऊपर जो अधिकारी ठहराए हैं
उन्हें परमेश्वर औज़ार की तरह इस्तेमाल करता है
ताकि हमारे चरित्र की सैंकड़ों कमियां दूर हों और हम सिद्ध बनें।

उदाहरण : यूसुफ : उसके घमण्ड को 'छेनी' से "काटा जाना" और "तराशा जाना" आवश्य था।

नीतिवचन 8:13 घमण्ड, अंहकार, और बुरी चाल से, और उलट फेर की बात से भी मैं बैर रखती हूं।

V. अधिकारियों को अस्वीकार करने का परिणाम

यदि हम अधिकारियों की ताड़ना को लगातार अस्वीकार करते हुए, वही करें जो हमें सही लगता है या वो करें जिसे हमें करने की इच्छा है और अधिकारियों की आज्ञा न मानें तो हमारे जीवन की क्षमता को असुधार्य क्षति हो सकती है।

नीतिवचन 29:1 जो बार बार डांटे जाने पर भी हठ करता है, वह अचानक नाश हो जाएगा और उसका कोई भी उपाय काम न आएगा।

विद्रोह में तीन चरण का नुकसान

राजा शाऊल तीन बार परमेश्वर के वचन के विरुद्ध गया और प्रत्येक बार उसका अलग विशेष परिणाम हुआ।

1. उसके बच्चों ने वो मिरास खो दी जो उनकी हो सकती थी !

1 शमूएल 13:13–14 शमूएल ने शाऊल से कहा, तू ने मूर्खता का काम किया है; तू ने अपने परमेश्वर यहोवा की आज्ञा को नहीं माना; नहीं तो यहोवा तेरा राज्य इस्राएलियों के ऊपर सदा स्थिर रखता। परन्तु अब तेरा राज्य बना न रहेगा; यहोवा ने अपने लिये एक ऐसे पुरूष को ढूंढ लिया है जो उसके मन के अनुसार है; और यहोवा ने उसी को अपनी प्रजा पर प्रधान होने को ठहराया है, क्योंकि तू ने यहोवा की आज्ञा को नहीं माना।।

2. उसकी अपनी सेवा का नुकसान

1 शमूएल 15:28 तब शमूएल ने उस से कहा आज यहोवा ने इस्राएल के राज्य को फाड़कर तुझ से छीन लिया, और तेरे एक पड़ोसी को जो तुझ से अच्छा है दे दिया है।

अधिकारियों को अस्वीकृत करने के कारण जो चरित्र और समझ की हम में कमी है, वह उस क्षमता को धूमिल कर देगी जो हमारी सेविकाई प्राप्त कर सकती थी।

3. उसका शारीरिक जीवन कम किया गया

1 शमूएल 28:19 फिर यहोवा तुझ समेत इस्राएलियों को पलिश्तियों के हाथ में कर देगा; और तू अपने बेटों समेत कल मेरे साथ होगा; और इस्राएली सेना को भी यहोवा पलिश्तियों के हाथ में कर देगा।

परमेश्वर की आज्ञा मानने और एक लम्बे और स्वस्थ जीवन के बीच में सीधा परस्पर सम्बन्ध है :

इफिसियों 6:1–3 हे बालकों, प्रभु में अपने माता पिता के आज्ञाकारी बनो, क्योंकि यह उचित है। अपनी माता और पिता का आदर कर (यह पहिली आज्ञा है, जिस के साथ प्रतिज्ञा भी है)। कि तेरा भला हो, और तू धरती पर बहुत दिन जीवित रहे।

नीतिवचन 3:7–8 अपनी दृष्टि में बुद्धिमान न होना; यहोवा का भय मानना, और बुराई से अलग रहना। ऐसा करने से तेरा शरीर भला चंगा, और तेरी हड्डियां पुष्ट रहेंगी।

1 कुरिन्थियों 11:27–32 इसलिये जो कोई अनुचित रीति से प्रभु की रोटी खाए, या उसके कटोरे में से पीए, वह प्रभु की देह और लहू का अपराधी ठहरेगा। इसलिये मनुष्य अपने आप को जांच ले और इसी रीति से इस रोटी में से खाए, और इस कटोरे में से पीए। क्योंकि जो खाते-पीते समय प्रभु की देह को न पहिचाने, वह इस खाने और पीने से अपने ऊपर दण्ड लाता है। इसी कारण तुम में से बहुत से निर्बल और रोगी हैं, और बहुत से सो भी गए। यदि हम अपने आप में जांचते, तो दण्ड न पाते। परन्तु प्रभु हमें दण्ड देकर हमारी ताड़ना करता है इसलिये कि हम संसार के साथ दोषी न ठहरें।

VI. अनाज्ञाकारिता के चार कारण

- हठीलापन

1 शमूएल 15:23 देख बलवा करना और भावी कहनेवालों से पूछना एक ही समान पाप है, और हठ करना मूरतों और गृहदेवताओं की पूजा के तुल्य है।

रोमियों 2:5 पर अपनी कठोरता और हठीले मन के अनुसार उसके क्रोध के दिन के लिये, जिस में परमेश्वर का सच्चा न्याय प्रगट होगा, अपने निमित्त क्रोध कमा रहा है।

यिर्मयाह 7:24 पर उन्हों ने मेरी न सुनी और न मेरी बातों पर कान लगाया; वे अपनी ही युक्तियों और अपने बुरे मन के हठ पर चलते रहे और पीछे हट गए पर आगे न बढ़े।

यिर्मयाह 18:12 परन्तु वे कहते हैं, ऐसा नहीं होने का, हम तो अपनी ही कल्पनाओं के अनुसार चलेंगे और अपने बुरे मन के हठ पर बने रहेंगे।

- बुद्धिवाद

1. कार्य और विश्वास के लिए सबसे श्रेष्ठ मार्गदर्शक के रुप में तर्क पर निर्भरता।
2. यह सिद्धान्त कि अधिकारियों को मानने या आत्मिक प्रकाशन की बजाय तर्क का प्रयोग, कार्य या विश्वास के लिए एक अच्छा या सबसे बढ़िया आधार है।
3. किसी के आचरण के लिए अपने को सन्तुष्ट करने वाले परन्तु गलत तर्क की सोच।

परमेश्वर के अधिकार को स्वीकार करने के बजाय मनुष्यों के लिए उसके भय से प्रेरित तर्क के कारण इब्राहीम ने झूठ बोला।

उत्पत्ति 20:11 इब्राहीम ने कहा, **मैं ने यह सोचा था,** कि इस स्थान में परमेश्वर का कुछ भी भय न होगा; सो ये लोग मेरी पत्नी के कारण मेरा घात करेंगे।

मनुष्यों के भय ने याकूब में युक्तिकरण को जन्म दिया और उसने लाबान को धोखा दिया।

उत्पत्ति 31:31 याकूब ने लाबान को उत्तर दिया, **मैं यह सोचकर डर गया** था : कि कहीं तू अपनी बेटियों को मुझ से छीन न ले।

- परमेश्वर के लिए **प्रेम** या व्यक्ति (अधिकारी) के लिए आदर कम है।

जिस के पास मेरी आज्ञा है, और वह उन्हें मानता है, वही मुझ से प्रेम रखता है यूहन्ना 14:21

यदि कोई मुझ से प्रेम रखे, तो वह मेरे वचन को मानेगा यूहन्ना 14:23

जो मुझ से प्रेम नहीं रखता, वह मेरे वचन नहीं मानता यूहन्ना 14:24

- परमेश्वर का **भय** या व्यक्ति कमज़ोर है

अतः हम ज़्यादा अपने आप पर ... अपनी बुद्धि पर ... निर्भर करते हैं।

VII. अधिकारियों की ओर प्रतिक्रिया

उदाहरण 1
एक इक्कीस वर्ष की नवयुवती जो अपने घर से दूर रहती है और अपना खर्च स्वयं उठाती है, दृढ़ता से यह विश्वास करती है कि यह परमेश्वर की इच्छा है कि वह उस लड़के विशेष से विवाह करे। लड़की के माता-पिता इस बात का यह कह कर कड़ा विरोध करते हैं कि वह लड़का उनकी बेटी के लिए उचित नहीं है, तथा, इस कारण यह विवाह ठीक नहीं है।

आप क्या सलाह देंगे ?

उदाहरण 2
एक 18 वर्ष का लड़का परमेश्वर की सेवा के लिए जाने की योजना बनाता है। वह बाइबल कालेज में जाना चाहता है। उसके माता-पिता बाइबल अध्ययन या परमेश्वर की सेविकाई के महत्व को समझ नहीं पाते, तथा वे उसको धमकी देते हैं कि यदि वह पास के विश्व विद्यालय में दाखिला नहीं लेता है तो उसको कोई खर्च नहीं दिया जाएगा। उस लड़के को वे सलाह देते हैं कि यदि वह अन्य व्यवसाय पहले सीख लेता है, तो यदि उसकी सेविकाई असफल भी हो जाए तौभी उसे हमेशा इस बात का सहारा रहेगा कि उसे और भी कुछ आता है। पुत्र का कहना यह है कि सेविकाई में असफल होने वाली कोई बात नहीं है, और जो उसके लिए आवश्यक है वह बाइबल प्रशिक्षण है।

आप क्या सलाह देंगे ?

उदाहरण 3
एक किशोरी प्रत्येक रविवार की शाम को अपने घर से चुपचाप निकल कर पास की कलीसिया में जवानों की सभा में जाती है। वह जानती है कि यदि उसकी मां को यह पता चलता है कि वह चर्च गई है तो वह बहुत नराज़ होंगी, इसलिए उसे यह चुपचाप करना पड़ता है। उस कलीसिया की सभाओं से इस किशोर लड़की को बहुत आशिषें मिली हैं।

आप क्या सलाह देंगे ?

हमारे ऊपर अधिकार में लोग चाहे जितने असंगत या अनुचित क्यों न हों, हम उनके प्रति अपने जवाब के लिए स्वयं जिम्मेवार हैं।

परमेश्वर, सबसे कठोर लोगों के साथ भी हमारा ताल-मेल मिलाने के लिए इस्तेमाल करता है ताकि हमें परिपक्व मनोवृति को विकसित करने की प्रेरणा मिल सके।

हम जिस परिस्थिति से हो कर जा रहें हैं उस में परमेश्वर की ज़्यादा रुची नहीं है क्योंकि जिसमें से हो कर हम जा रहे हैं उसके प्रति हमारी प्रतिक्रिया के साथ वह है। उन सब बातों में जिसकी वह योजना बनाता या जिसकी वह अनुमति देता है कि हम अनुभव करें, उसकी मुख्य रुची इस बात में है कि हमारा आचार-व्यवहार उसके पुत्र यीशु मसीह के अनुकूल हो जाए।

जब यीशु अपनी उम्र में बढ़ रहे थे तब वह अपने माता-पिता के अधिकार के अधीनता में थे।

इब्रानियों 5:8 और पुत्र होने पर भी, उस ने दुख उठा उठाकर आज्ञा माननी सीखी।

यह पद प्रभु यीशु मसीह के अपने पिता के प्रति आधीन होने की बात कर रहा है।

अधिकारी जन किस लक्ष्य को प्राप्त करना चाहते हैं, इस बात को समझना सीखना बहुत अवश्यक है।

- ध्यान से सुनें
- उनकी आंखों से देखने का प्रयास करें

विशेषकर तब जब हमें ऐसा कुछ करने को कहा जाता है जो हमारे नैतिक विश्वास या पवित्र शास्त्र के विरुद्ध हो।

उदाहरण :
दानिय्येल को विधर्मी विदेशी शासकों द्वारा बन्दी बना कर उसके घर, परिवार, और देश से दूर ले जाया गया तथा उसे वो सब करने को कहा गया जो पवित्र शास्त्र के विरुद्ध थी।

दानिय्येल 1:8 परन्तु दानिय्येल ने अपने मन में ठान लिया कि वह ... अपवित्र न होए

दानिय्येल ने अपने ऊपर अधिकारियों को अपनी परिपक्व मनोवृति का प्रदर्शन किया। उसका आचरण उसे अपने ऊपर अधिकारियो के साथ "प्रेममय कृपादष्टि" में ले आया।

जब दानिय्येल को वो सब खाने के लिए कहा गया जो पवित्र शास्त्र का उल्लंघन करता है, तो वह समझ गया था कि इसका मूल उद्देश्य उसके विश्वास को दूषित करना नहीं परन्तु उसे स्वस्थ और बुद्धिमान बनाना था। उसने एक ऐसा विकल्प रखा जिस से उसका नैतिक विश्वास का उल्लंघन भी न हो और अधिकारियों को उनके लक्ष्य की प्राप्ति भी हो जाए।

उसकी विनती में आदर, रचनात्मकता और शब्दों के सुविचारित चुनाव पर ध्यान दें :

दानिय्येल 1:12-14 तब दानिय्येल ने कहा, मैं तुझ से विनती करता हूं, अपने दासों को दस दिन तक जांच, हमारे खाने के लिये सागपात और पीने के लिये पानी ही दिया जाए। फिर दस दिन के बाद हमारे मुंह और जो जवान राजा का भोजन खाते हैं उनके मुंह को देख ; और जैसा तुझे देख पड़े, उसी के अनुसार अपने दासों से व्यवहार करना। उनकी यह विनती खोजों के प्रधान ने मान ली, और दस दिन तक उनको जांचता रहा।

जब हमारा व्यवहार सही है और हमने नम्रता और सावधानी पूर्वक अपनी विनती रख दी है, तब फिर हमें रुक कर उनके निर्णयों की प्रतिक्षा करनी चाहिए।

हमें परमेश्वर को "उनका हृदय बदलने " के लिए समय देना चाहिए।

नीतिवचन 16:7 जब किसी का चालचलन यहोवा को भवता है, तब वह उसके शत्रुओं का भी उस से मेल कराता है।

नीतिवचन 21:1 राजा का मन नालियों के जल की नाई यहोवा के हाथ में रहता है, जिधर वह चाहता उधर उसको फेर देता है।

हालांकि फिरौन ने अपने हृदय को कठोर बनाए रखा फिर भी परमेश्वर उस पर दबाव बढ़ाता रहा जब तक वह इस्राएलियों को छोड़ देने के लिए तैयार न हो गया। तब तक , इस्राएली भी अपने शासकों की आज्ञा मानते – मानते मज़बूत हो गए ।

"और उसके कुल में से कोई निर्बल न था।" भजन संहिता 105:37

जब हम अपने ऊपर अधिकारियों की आज्ञा मानते हैं तब परमेश्वर "सब बातों में हमारे लिए भलाई को उत्पन्न करता है", धैर्य पूर्वक सब समस्याओं को सह लें और दुख भी उठा लें तथा विद्रोह करने से मना करें।

VII. जब आपको कुछ ऐसा करने को कहा जाए जो आपको गलत लगता हो तब क्रिया के सात कदम।

1. अपने व्यवहार को जांचें

- एक स्वतन्त्र आत्मा निष्ठाहीनता का आधार है।
- एक दोषी ठहराने वाली आत्मा आत्म–धार्मिकता का आधार है।
- एक अकृतज्ञ आत्मा घमण्ड का आधार है।
- एक सुस्त आत्मा बेईमानी और गरीबी का आधार है।
- एक कड़वाहट वाली आत्मा स्वार्थ का आधार है।
- एक अशुद्ध आत्मा असयंम का आधार है

2. अपने विवेक को स्पष्ट करें

- अपने उस व्यवहार को ठीक करें जिसने ठेस पहुंचाई है।
- अधिकारी जनों की इच्छाओं और अधूरे पड़े निर्देशों को पूरा करें।
- अपनी गलती स्वीकार कर लें और क्षमा मांगें।
- सही सम्बन्धों को पुनःस्थापित करने के लिए आवश्यक सुधार करें।
- दूसरों को ठेस पहुंचाने से बचने के लिए अपनी स्वतन्त्रता को सीमा में रखना सीखें।

3. मुख्य उद्देश्य को पहचानना

- लोगों से पूछें कि उनकी इच्छा, उनका लक्ष्य क्या है।
- इस बात को समझने का प्रयास करें कि वे यह आज्ञा क्यों दे रहें हैं।
- उनसे कहें कि वे आप को यह समझाए।

4. रचनात्मक विकल्पों को तैयार करें

- रचनात्मक होने से रोकने वाली हर विरोधी आत्मा को हटाएं।
- कठिन परिस्थितियों का प्रयोग अपने सन्दर्भ के ढांचे के विस्तार के लिए करें।
- कठिन परिस्थितियों के लिए नीतिवचन से अन्तर्दृष्टि प्राप्त करें।
- ऐसे विकल्प को तैयार करें जिसमें वह अपने लक्ष्य की प्राप्ति को देख सके।

5. अपने ऊपर अधिकारी से अनुरोध करें

- सीखने और सेवक की आत्मा रखें।
- अपनी व्यक्तिगत विश्वास को बिना दोष लगाने वाली आत्मा के समझाएं।
- रचनात्मक विकल्प को सामने रखें।
- उन्हें समझाए कि कैसे इसके द्वारा उनके लक्ष्य की प्राप्ति हो सकती है।
- अन्तिम निर्णय उनके ऊपर छोड़ दें।

6. उनके मनों को बदलने के लिए परमेश्वर को समय दें

- आप अपेक्षा कर सकते हैं कि परमेश्वर अधिकारी के ऊपर बाहरी दबाव डाले।
- इस बात की भी अपेक्षा करें कि वह आप पर अतिरिक्त दबाव डाले
- इस बात को पहिचाने कि परमेश्वर अपने दबाव को हमारे लाभ के लिए इस्तेमाल करेगा।
- सही उत्तरों का निर्माण करें जो उसके बदले हुए निर्णयों का आधार होगा।

7. गलत कार्य न करने पर भी दुःख उठाना

- चेले प्रभु यीशु का इन्कार करने की बजाय अपने परिवार के द्वारा त्यागे जाने के लिए तैयार थे। (मत्ती 10:32–39)
- धार्मिक अगुवों और सरकारी अधिकारियों के द्वारा प्रतिबन्ध लगा देने के बावजूद चेले सुसमाचार का प्रचार करते रहे (प्रेरितों के काम 4:19)।
- परमेश्वर की आराधना बन्द करके राजा को दण्डवत करने की बजाय दानिय्येल मरने के लिए तैयार था (दानिय्येल 6:12–16)।

संदर्भ :

Research in Principles of Life Basic Seminar Textbook
Institute in Basic Youth Conflicts, Inc.